अध्याय 01

आधुनिक काल में भारत का इतिहास

सीखने के प्रतिफल

स्त्रोत, स्त्रोत के इस्तेमाल भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त नामावली और व्यापक बदलावों के आधार पर आधुनिक काल का मध्यकाल और प्राचीनकाल से अंतर करते हैं।

''वर्ग कक्ष में इतिहास के शिक्षक का प्रवेश... अभिवादन...शिक्षक कहानी प्रारंभ करते हैं—

पता है जब वो लड़ती थी तो बंदुकधारी सिपाही भी उसके तलवार का सामना नहीं कर पाते थे। उसने अंग्रेजों की सेना को धूल चटा दिया था। अपने बच्चे को पीठ पर बाँधे विरोधियों के बीच कहर थी। उसे हराना नामुंकिन था, परन्तु अपनों के धोखे ने उसे दुश्मनों के चंगुल में फंसा दिया। वह वीरांगना थी, उसने हार नहीं मानी। अंत में युद्ध के मैदान में वह वीरगति को प्राप्त हुई। सच में वह एक मर्दाना थी।''

तभी नित्या बीच में बोली सर, लक्ष्मीबाई .... रानी लक्ष्मीबाई। आलोक सर अपना सिर ऊपर-नीचे हिलाते हुए बोले बिलकुल सही, यह कहानी जो मैं सुना रहा हूँ वह रानी लक्ष्मीबाई की है।

तभी नमन चेहरे पर उत्सुकता का भाव लिए हुए ....

सर झाँसी की रानी ? आलोक सर मुस्कुराते हुए.........लक्ष्मीबाई ..... झाँसी रियासत की ही रानी थी। झाँसी वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य में अवस्थित है। यह भौगोलिक दृष्टि से बुंदलेखण्ड के पठार का हिस्सा है..... आदि बातों पर चर्चा हो रही थी तभी पिछले बेंच से आवाज आई। सर..... सच में ?

आलोक सर शांत भाव से ...... आपका प्रश्न रानी लक्ष्मीबाई की कहानी की सच्चाई से संबंधित है। दूसरे शब्दों में कहें तों यह इस घटला की प्रमाणिकता का प्रश्न है।

वास्तव में इतिहास अब तक घटित प्रमाणिक घटनाओं तथा परिवर्तनों का अध्ययन है। किसी घटना व परिवर्तन की प्रमाणिकता इतिहास का महत्वपूर्ण पहलू है। और इस प्रमाणिकता का आधार इतिहास के स्त्रोत हैं।

इतिहास के स्त्रोत

इतिहास के स्त्रोत वे आधार हैं जो किसी क्षेत्र की बीती हुई घटनाओं और परिवर्तनों को लिखने में मदद करते हैं। हुई घटनाओं और परिवर्तनों को लिखने में मदद करते हैं ये स्त्रोत मानव से संबंधित होते हैं, यथा, जीवाश्म, शिलालेख, मुहरें, मंदिर, किले, मूर्तियाँ, विदेशी यात्रियों के विवरण आदि। इतिहास के इन स्त्रोतों को हम मुख्यत: तीन व्यापक

© JCERT not to be republished

समूहों हैं—पुरातात्विक, साहित्यिक और विदेशी यात्रियों के विवरण में बाँट सकते हैं।

(i) पुरातात्विक स्त्रोत—इसके अंतगर्त मुख्यत: अभिलेख, सिक्के, स्मारक, भवन, मूर्तियाँ, मंदिर-मस्जिद, चित्रकला आदि आते हैं।

(ii) साहित्यक स्त्रोत—साहित्यिक स्त्रोत को भी हम दो भागों धार्मिक तथा लौकिक साहित्य में बाँट सकते हैं। धार्मिक पुस्तकें किसी-न-किसी धर्म के प्रभाव से लिखी जाती हैं, किन्तु उसमें बहुत सारी बातें तत्कालीन समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि संबंधी बातें तत्कालीन समाज अर्थव्यवस्था राजनीति आदि संबंधी बातें भी होती है, जैसे—वेद पुराण, आदि जबकि लौकिक साहित्य गैर-धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं, जैसे—कौटिल्य का अर्थशास्त्र।

(iii) विदेशी यात्रियों के विवरण—विदेशी यात्रियों एवं लेखकों के विवरण से भी हमें इतिहास की जानकारी मिलती है।

उपरोक्त स्त्रोतों की मदद से इतिहासकार, इतिहास, का निर्माण करते हैं। इतिहास लिखने से पहले ...... वे इन स्त्रोतों की प्रमाणिकता की जाँच भी करते हैं। इसके लिये इतिहासकार विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त जानकारियों को आपस में मिलाते हैं।

आधुनिक ऐतिहासिक स्त्रोत

ऐतिहासिक स्त्रोत के मामलों में, आधुनिक युग, मध्यकाल और प्राचीनकाल से विशेष है, क्योंकि इस काल के जानकारी के स्त्रोतों की प्रचुरता है। आधुनिक काल के स्त्रोत न केवल ढेर सारे हैं। बल्कि कई प्रकार के भी हैं। इस काल में सरकारी दस्तावेजों व रिकॉर्ड के साथ-साथ गैर-सरकारी लेखों पुस्तकों कहानियाँ, कविताएँ लोगों की डायरी, उपन्यास आदि की कोई कमी नहीं है। आधुनिक युग में ऐतिहासिक स्त्रोत चारों तरफ मौजूद हैं। आज हमारी नजर जिधर उठती है, हमें ऐतिहासिक स्त्रोतों की भरमार नजर आती है।

इस काल में छापाखाना के विकास होने से मुद्रित स्त्रोतों की कोई कमी नहीं रही। अंग्रेजों ने अपने शासन के दौराने सरकारी रिकॉर्ड रखने की परम्परा की शुरूआत की। इतिहासकारों के लिये यह सरकारी रिकॉर्ड उस युग की जानकारी प्राप्त करने का एक सशक्त माध्यम है। छपाई तकनीकी ने पाण्डुलिपि की कमियों को भी दूर कर दिया था।

अंग्रेजों ने अपने सभी महत्वपूर्ण दस्तावेजों और पत्रों को संभालकर रखने के लिये, सभी शासकीय संस्थानों में अभिलेख कक्ष बनवाए। कलंक्टरेट, कमिश्नर के कार्यालय, प्रांतीय सचिवालय, कचहरी सभी के अपने रिकॉर्ड रूम बनाये गये। महत्वपूर्ण दस्तावेजों को सुरक्षित रखने के लिये अभिलेखागार और संग्रहालय जैसे संस्थान भी स्थापित किये गये, जो आज भी मौजूद है। इन अभिलेखागारों और संग्रहालयों में उस समय के सरकारी निर्देश एवं अन्य पत्रों को हम आज भी देख सकते हैं। वर्तमान में सरकारी रिकॉर्डो को ऑनलाइन किया जाता है।

© JCERT not to be republished

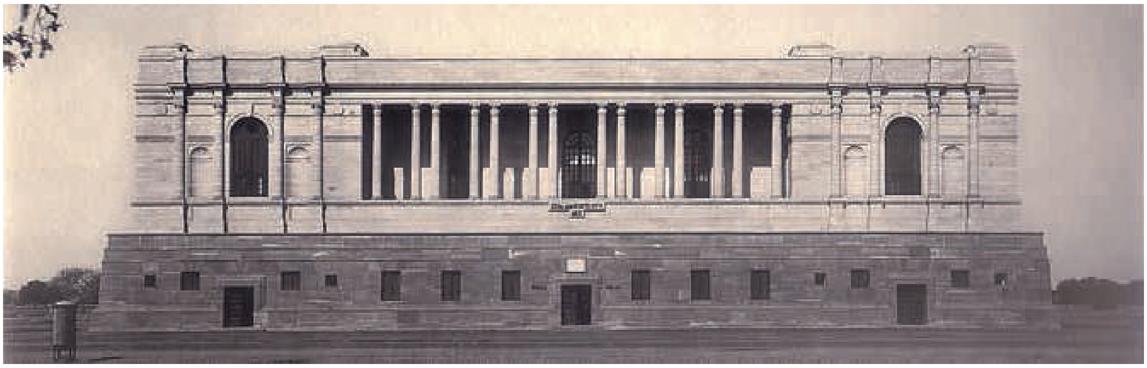

1920 के दशक में बना भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार

ब्रिटिश काल में जब नई दिल्ली का निर्माण हुआ तो राष्ट्रीय संग्रहालय और राष्ट्रीय अभिलेखागार को वायसराय के निवास स्थान के नजदीक अभिलेखागार को वायसराय के निवास स्थान के नजदीक बनाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेज इन दोनों संस्थानों को कितना महत्वपूर्ण मानते थे।

संग्रहालय—ऐसा संस्थान जो मानव और पर्यावरण के विरासत को सुरक्षित रखना है।

भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे पहला संग्रहालय 1814 ई. में वर्तमान कोलकाता में बना।

अभिलेखागार—अभिलेखागारों में सभी सरकारी और गैर-सरकारी अभिलेख (रिकॉर्ड) रखे जाते हैं।

खुसनवीस/सुलेखनवीस—ऐसे लोग थे, जो बहुत सुन्दर ढंग से चीजें लिखा करते थे। ये सरकारी दस्तावेजों की नकलें बनाते थे।

© JCERT not to be republished

सर्वेक्षण का प्रचलन

शासन का अंग्रेजों का भारत में मुख्य उद्देश्य था—अधिक-से-अधिक मुनाफा कमाना। इस उद्देश्य के लिये उसे भारत से संबंधित हर प्रकार की जानकारी एकत्र करना आवश्यक था। इसीलिए ब्रिटिश शासन के दरम्यान कई प्रकार के सर्वेक्षण किये गये। 19वीं संदी के प्रारम्भ में भारत का नक्शा तैयार करने के लिये सर्वेक्षण किया गया। इसके अलावा मिट्टी की गुणवत्ता, वन क्षेत्र, जीव जन्तु, फसलों, स्थानीय इतिहास आदि की जानकारी सर्वेक्षण से मिला। अंग्रेजों ने भारत में सर्वप्रथम जनगणना 1872 ई. में की। इसके बाद 1881 ई. से 10 वर्ष के अंतराल पर नियमित जनगणना किया जाने लगा। जनगणना के माध्यम ये सभी प्रांतों में रहने वाले लोगों की संख्या, उनके व्यवसाय आदि की जानकारी प्राप्त हुई।

(पता लगाइए 2021 में जनगणना कार्य क्यों नहीं हो पाया ?)

सरकारी रिकॉर्ड

अंग्रेजी सरकार सर्वेक्षणों से प्राप्त जानकारी तथा अन्य अभिलेखों को सरकारी दफ्तरों में सुरक्षित रखती थी। इन रिकॉर्डों से हमें अफसरों की सोच, उनकी दिलचस्पी और वे किन चीजों को सुरक्षित रखना चाहते थे, इसके बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

सरकारी रिकॉर्ड से हमें आम-जनता के मनोभाव के बारे में जानकारी नहीं मिलती है। हम इनसे यह पता नहीं लगा सकते कि आदिवासियों, किसानों, खदान में काम करने वाले मजदूरों और सड़कों पर जीवन बिताने वाले गरीब लोग क्या सोचते थे ? इन सभी के बारे में जानने के लिये हमें गैर-सरकारी स्त्रोत पर निर्भर रहना होगा। लोगों की डायरियाँ, आत्म कथाएँ, स्थानीय बाजार में बिकने वाली पुस्तकें, लोक कथाएँ आदि महत्वपूर्ण गैर सरकारी स्त्रोत हैं।

छापाखाना का आविष्कार योहान्स गुटनेवर्ग-नामक जर्मन वैज्ञानिक ने किया था।)

© JCERT not to be republished

स्त्रोत का इस्तेमाल

इतिहास स्त्रोतों का इस्तेमाल करके इतिहास के लिखते हैं। कोई भी स्त्रोत अपने आप में पूर्ण नहीं होता। इतिहासकार की व्यक्तिगत सोच और विचार इतिहास-निर्माण को प्रभावित करती है। आधुनिक भारत के कई इतिहासकार साम्राज्यवादी व औपनिवेशिक मानसिकता को रखते थे। इसका व्यापक प्रभाव आधुनिक भारत के इतिहास-लेखन पर पड़ा। इसीलिए उन्होंने ब्रिटिश सत्ता को भारत के लिये लाभकारी बताया। वे श्वेत व्यक्ति के बोझ के सिद्धान्त को मानते थे। इस सिद्धान्त के अनुसार श्वेत यानी गोरे लोगों पर काले लोगों (भारतीय) को सभ्य बनाने की जिम्मेवारी है। अर्थात् उनके नजर में हम काले भारतीय असभ्य हैं।

साम्राज्यवाद इतिहासकारों के विपरीत राष्ट्रवादी इतिहासकार थे। ये इतिहास के स्त्रोतों का इस्तेमाल स्वदेशी शासन को अच्छा बताने के लिये करते थे। राष्ट्रवादी विचार भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा हुआ था इसीलिए इनके द्वारा लिखे गये इतिहास में भारत की सभ्यता और संस्कृति के प्रति गौरव का भाव मिलता है।

वास्तव में स्त्रोतों के इस्तेमाल के क्रम में विषयनिष्ठता का आना स्वाभाविक है। अतः जहाँ तक संभव है इतिहास के स्त्रोतों का प्रयोग निष्पक्ष एवं तथ्यपरक करना चाहिए।

उपनिवेशवाद क्या है ?

उपनिवेशवाद वह विचारधारा है, जिसके तहत एक विकसित एवं शक्तिशाली राष्ट्र द्वारा किसी पिछड़े एवं कमजोर देश पर सत्ता स्थापित करते हैं। इससे विकसित देश कमजोर देश के संसाधनों का इस्तेमाल अपने

हित के लिये करता हैं। फिर इस सत्ता को कायम रखने के लिये सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक नियंत्रण भी स्थापित करता हैं।

इस पाठ्य पुस्तक में हम भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के बारे में पढ़ेंगे। उन्होंने किस प्रकार स्थानीय नवाबों और राजाओं को गद्दी से उतारकर शासन का कब्जा जमाया।

अंग्रेज भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आये थे। लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था और शासन पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। अपने सारे खर्चो की पूर्ति के लिये उन्होंने यहीं से राजस्व की वसूली की। उन्होनें यहाँ से सस्ती चीजें खरीदकर, इंग्लैण्ड में निर्मित वस्तुओं को मंहगें कीमत पर बेचा। अंग्रेजों द्वारा किये गये आर्थिक बदलाव को जानेंगे। ब्रिटिश शासन के कारण भारत की मूल्य-मान्यताओं, पंसद- नापसंद, नीति-रिवाजों और तौर-तरीकों में हुए परिवर्तनों को भी समझेंगे।

इस प्रकार हम देखेंगे कि कैसे औपनिवेशीकरण में एक देश द्वारा दूसरे देश में राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृति परिवर्तन किया जाता है।

(भारत किस देश का उपनिवेश था ? इंग्लैण्ड)

© JCERT not to be republished

भारतीय उपमहाद्वीप और नामावली

आधुनिक भारत में हम जिस भारतीय महाद्वीप के बारे में पढेंगे वह वर्तमान भारत देश से काफी बड़ी और भिन्न है। 15 अगस्त 1947 ई. के पहले भारत में आज का पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा पाक अधिकृत कश्मीर भी शामिल था। इस विशाल भू-खण्ड के विभिन्न क्षेत्रों के लिये प्रभुक्त होने वाले नामों में समय-समय पर परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन के समस सम्पूर्ण भारत तीन प्रेसीडेन्सियों-कलकत्ता, मुम्बई और मद्रास में विभक्त था। उस समय कलकत्ता प्रेसीडेन्सी में आज का झारखण्ड, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश सभी शामिल थे। लेकिन आज कलकत्ता को कोलकाता के नाम से जानते हैं।

दक्षिण भारत में मद्रास प्रेसीडेन्सी के अंतगर्त वर्तमान तमिलनाडु, केरल, आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक राज्य के क्षेत्र आते थे। आज मद्रास का नाम बदलकर चेन्नई हो गया और यह वर्तमान तमिलनाडु राज्य की राजधानी है। समय के साथ बम्बई, मुम्बई में बदल गया और मराठवाड़ा महाराष्ट्र में पंजाब के नाम से तो परिवर्तन नहीं हुआ लेकिन इसका क्षेत्र काफी सिमट गया। वीर राजपूतों का क्षेत्र राजपूताना अब राजस्थान हो गया तो अवध का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के नाम से जाना जाने लगा।

इतिहास में नामों का परिवर्तन महज शब्दों का बदलाव मात्र नहीं है, अपितु इसके महत्व व क्षेत्रों में भी परिवर्तन को दिखाता है।

झारखण्ड के विभिन्न नाम

हमारा राज्य झारखण्ड विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता था। इस क्षेत्र का प्रथम साहित्यिक उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में पुण्ड/पुण्ड्र के नाम से है। विष्णु पुराण में इसे मुण्ड तथा महाभारत में पुंडरिग देश और पशुभूमि नाम दिया गया। पूर्व मध्यकाल में इसे कलिन्द देश कहा गया है। 13वीं सदी से इस क्षेत्र के लिये झारखण्ड नाम का प्रयोग किया जाने लगा।

प्राचीनकाल में राजा कनिष्क की राजधानी पुरुषपुर का महत्वपूर्ण स्थान था। मध्यकाल में इस स्थान का नाम बदलकर पेशावर हो गया और इसका महत्व भी कम हो गया। मगध राज्य की प्रारंभिक राजधानी गिरिब्रज थी, जो राजगृह तथा बाद में राजगीर कहलाया। इसी तरह वर्तमान समय का बनारस, प्राचीनकाल में काशी और मध्यकाल में वाराणसी के नाम से जाना जाता था। आज का उड़ीसा राज्य महान् सम्राट अशोक के समय कलिंग के नाम से जाना था। इसी तरह भारत के कई क्षेत्रों के नाम समय के अनुसार परिवर्तित हुए।

भारत के आधुनिक काल का प्रारम्भ 23 जून 1757 ई.(प्लासी के युद्ध) से माना जा सकता है। यह समय था जब मुगल सत्ता के कब्र पर ब्रिटिश उपनिवेश अपना पैर फैला रहा था। आधुनिक भारत सत्ता परिवर्तन मात्र नहीं थी। यह बदलाव का काल था। प्राचीनकाल और मध्यकाल में जहाँ राजतंत्र था, राजा के आदेश ही कानून थे वहीं आधुनिक काल में कानून का शासन स्थापित किया जाने लगा। लेकिन यह कानून का शासन औपनिवेशिक चरित्र लिए हुए था। जबकि राजा का कानून जनकल्याणा से संबंधित था।

प्राचीनकाल से ही कृषि अर्थव्यवस्था का आधार रहा है तथा अधिशेष उत्पादन कृषकों के आय का साधन। कृषक आपनी आय का एक निश्चित भाग कर के रूप में राजा को देते थे। कमावेश सही स्थिति मध्यकाल तक रहा। आधुनिक काल में अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य, ब्रिटेन के हित में संसाधनों का दोहन था। अत: कृषि के वाणिज्यीकरण व नकदी फसलों पर विशेष जोर दिया जाने लगा। इससे एकतरफ भूमिहीन कृषकों का उद्‌भव हुआ तो दूसरी तरफ आत्म निर्भर ग्रामीण समाज का विघटन हुआ।

मध्यकाल में प्राचीनकाल के अपेक्षा तीव्र नगरीकरण हुआ। आधुनिक काल में भी नगरीकरण की प्रक्रिया जारी रही, किन्तु इसके स्वरूप में अंतर आ गया। मध्यकाल में जहाँ राजधानी नगरों का विकास हुआ वहीं आधुनिक काल से बंदरगाह नगर तेजी से बढ़ने लगें। कालीकट, बम्बई, सूरत, पाण्डीचेरी आदि समुद्र तटीय नगरों का महत्व बढ़ा। ब्रिटिश भारत में विआद्योगीकरण तथा धन के अपवाह ने भारत को आर्थिक रूप से कमजोर कर दिया।

शिक्षा के क्षेत्र में भी हमें आधुनिक काल में व्यापक बदलाव दिखाई पड़ने हैं। प्राचीनकाल में शिक्षा गुरुकुल में दिये जाते थे।

तक्षशिला, नालन्दा, आदन्नपुरी, बल्लभी आदि इस समय के विख्यात शिक्षा केन्द्र थे, जहाँ पढ़ने के लिये विदेशों से भी छात्र आते थे। मध्यकाल में मदरसा की भी शुरूआत हुई। आधुनिक काल में स्वदेशी शिक्षा

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

© JCERT not to be republished

का स्थान औपनिवेशक शिक्षा पद्धति ने ले लिया। मैकाले अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के द्वारा भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार करना चाहता था, जो अंग्रेजों को शासन करने में मदद करें। अंग्रेजी शिक्षा से एक नवीन प्रबुद्ध वर्ग का उदय हुआ। अंग्रेजों की माँग के विपरीत इस प्रबुद्ध वर्ग के कुछ लोग आगे चलकर भारत में सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व किये। इस वर्ग से स्वामी विवेकानन्द राजा राजमोहन राय, ज्योतिबा फूले, सैय्यद अहमद खाँ, आदि थे। इनके प्रयासों से कई सुधार आये। वास्तव में शिक्षा के केन्द्र में धर्म का स्थान विज्ञान और लौकिक शिक्षा ने ले लिया। आगे चलकर यही शिक्षा और नवोदित प्रबुद्ध वर्ग स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बना, जिसका अध्ययन हम आगे के अध्याय में करेंगे।

स्मरणीय तथ्य

- इतिहास के स्त्रोत वह आधार है, जिनके मदद से हम इतिहास लिखते हैं।
- इतिहास के स्त्रोतों को मुख्यत: तीन भागों–पुरातात्विक साहित्यिक और विदेशी यात्रियों के विवरण में बाँट सकते हैं।
- पुरातात्विक स्त्रोत में अभिलेख, सिक्के, स्मारक, भवन, मूर्तियों, मंदिर, मस्जिद, चित्रकला आदि आते हैं।
- आधुनिक काल को जानने के ढेर सारे स्त्रोत उपलब्ध हैं।
- अंग्रेजों में अपने सभी महत्वपूर्ण दस्तावेजों और पत्रों को संभालकर रखने के लिये, सभी शासकीय संस्थानों में अभिलेख कक्ष बनवाए।
- भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार 1920 के दशक में बना।
- भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे पहला संग्रहालय 1814 ई. में वर्तमान कोलकाता में बना।
- अंग्रेजों ने भारत को जाने तथा समझने के लिये कई तरह के सर्वेक्षण करवाये।
- भारत में सर्वप्रथम जनगणना 1872 ई. में हुई।
- सरकारी रिकॉर्ड से हमें सरकार की सोच और दिलचस्पी का पता चलता है।
- सरकारी रिकॉर्ड से हमें आमजनता के विचार एवं भाव का पता नहीं चल पाता।
- लोगों की डायरियाँ, आत्म कथाएँ, स्थानीय बाजार में बिकने वाली पुस्तकें, लोक–कथाएँ आदि गैर–सरकारी स्त्रोत हैं।
- 'श्वेत व्यक्ति के बोझ' सिद्धान्त के अनुसार–अंग्रेजे समझते थे कि ईश्वर उन्हें भारतीयों का सभ्य बनाने के लिये भेजा है।
- साम्राज्यवादी इतिहासकार भारत पर अंग्रेजी सत्ता को सही साबित करना चाहते थे।
- राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने स्त्रोतों का इस्तेमाल भारत की सभ्यता संस्कृति को अच्छा बनाकर भारतीयों में गौरव का भाव जगाया।

© JCERT not to be republished

- आजादी से पहले, भारत में आज का पाकिस्तान और बांग्लादेश भी शामिल था।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन में भारत तीन प्रेसीडेन्सियों – कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में विभक्त था।
- मद्रास का पुराना नाम चेन्नई है।
- पुण्ड/पुण्ड्र, मुण्ड, पुंडरिक देश, पशुभूमि, कलिन्द देश आदि झारखण्ड क्षेत्र के पुराने नाम हैं।
- प्राचीनकाल और मध्यकाल में जहाँ राजतंत्र था वहीं आधुनिक काल में कानून का शासन हो गया।
- मध्यकाल में राजधानी नगरों का विकास हुआ वहीं आधुनिक काल में बंदरगाह नगरों का विकास तीव्र गति से हुआ।

स्व-मूल्यांकन

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(1) इतिहास का निर्माण .... के आधार पर होता है।

(2) .... सदी के प्रारम्भ में भारत का नक्शा तैयार करने के लिये सर्वेक्षण किये गये।

(3) अभिलेखों को सुन्दर ढंग से लिखने वाले .... कहलाते थे।

(4) भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार .... में बनाया गया।

(5) छापाखना का आविष्कार .... में किया था।

(6) चेन्नई का पुराना नाम .... था।

(7) प्लासी का युद्ध सन् .... में हुआ था।

उत्तर—(1) स्त्रोत, (2) 19 वीं, (3) खुशनवीय, (4) कलकत्ता, (5) योहान्स गुटेनबर्ग, (6) मद्रास, (7) 1757

II. मिलान कीजिए—

	पुराना नाम		नया नाम
(क)	कलकत्ता	a.	बनारस
(ख)	बम्बई	b.	उड़ीसा
(ग)	राजपुताना	c.	राजगीर
(घ)	अवध	d.	पेशावर
(ड.)	पुरुषपुर	e.	उत्तर प्रदेश
(च)	गिरिव्रज	f.	राजस्थान
(छ)	कलिंग	g.	मुम्बई

© JCERT not to be republished

(ज) काशी h. कोलकाता

उत्तर—(क) — h, (ख) — g. (ग) — f, (घ) — e, (ङ) — d, (च) — c, (छ) — b, (ज) — a.

III. सही और गलत का निशान लगाइये—

(1) अंग्रेज प्रशासन के लिये अभिलेख तैयार करते थे। ( )

(2) सरकारी दस्तावेजों से हमें आम लोगों की सोच का पता चलता है। ( )

(3) अंग्रेजों का कानून का शासन स्थापित किया। ( )

(4) अंग्रजों द्वारा कृषि का वाणिज्यीकरण कृषकों के लिये लाभकारी था। ( )

(5) झारखण्ड क्षेत्र का प्रथम साहित्यिक उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है। ( )

उत्तर—(1) ✔, (2) ×, (3) ✔, (4) ✔, (5) ✔

IV. लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) इतिहास को जानने के कौन-कौन से स्रोत हैं ?

(2) साम्राज्यवादी इतिहासकारों के क्या मत थे ?

(3) खुशनवीस के क्या कार्य थे ?

(4) अंग्रेजों ने सर्वेक्षण पर जोर क्यों दिया ?

(5) सरकारी रिकॉर्ड की क्या कमियाँ थी ?

© JCERT not to be republished

V. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) उपनिवेशवाद क्या है ? इसका भारत का क्या प्रभाव पढ़ा ?

(2) आधुनिक ऐतिहासिक स्रोत कौन-कौन हैं ?

VI. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) निम्नांकित में से कौन पुरातात्विक स्रोत के अंतर्गत नहीं आते हैं ?

(क) स्मारक (ख) मूर्तियों (ग) सिक्के (घ) ऋग्वेद

(2) किस काल का स्रोत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं ?

(क) प्राचीनकाल (ख) मध्यकाल (ग) आधुनिक काल (घ) किसी काल का नहीं

(3) अंग्रेजों ने निम्नांकित में से किसका सर्वेक्षण नहीं किये ?

(क) मिट्टी का गुणवत्ता (ख) वन-क्षेत्र

(ग) लोगों की संख्या (घ) भारतीय धन जो इंग्लैण्ड जा रहे था

(4) निम्नांकित में से कौन-सा नाम झारखण्ड क्षेत्र के लिये प्रयुक्त नहीं हुआ ?

(क) पुण्ड्र (ख) पशुभूमि (ग) मध्य देश (घ) कलिन्द देश

(5) उपनिवेशवाद से संबंधित कौन नहीं है ?

(क) कमजोर देश का शोषण

(ख) गरीब देश के संसाधनों का प्रयोग अमीर देश के हित में

(ग) कमजोर देश है उद्योग-धंधों का पतन

(घ) अमीर देश के उपयोग धंधों का पतन

उत्तर—(1) (घ), (2) (ग), (3) (घ), (4) (ग), (5) (घ)

© JCERT not to be republished